Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

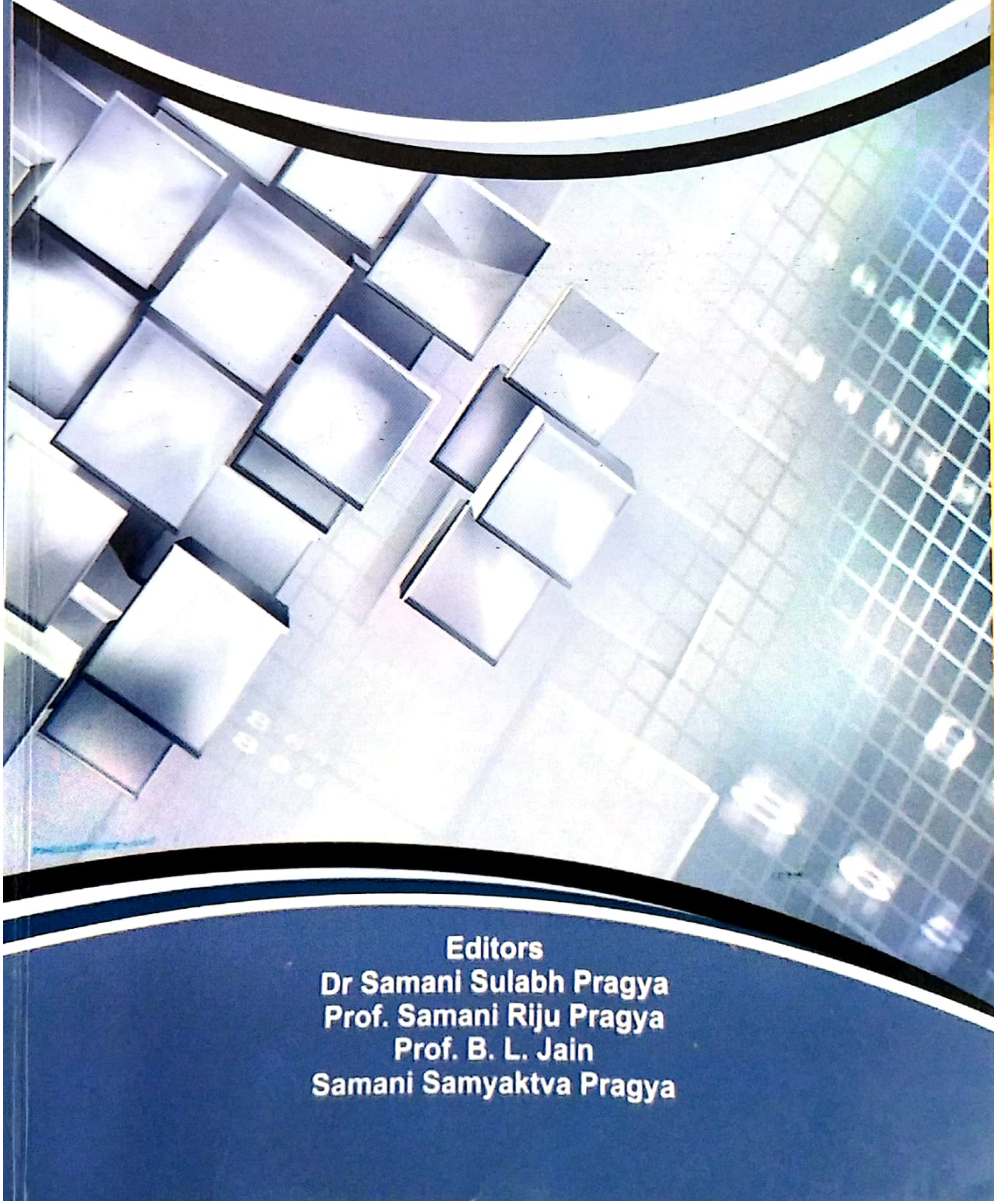

Editors
Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

Scanned by CamScanner

Dimensions of Jain Philosophy and Indian Culture

Editor : Dr Samani Sulabh Pragya
Prof. Samani Riju Pragya
Prof. B. L. Jain
Samani Samyaktva Pragya

© : Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

ISBN : 978-93-83634-38-5

Edition : 2018

Rs. : 350/-

Publisher : Bhagwaan Mahaveer International Research Center
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun 341306 (Rajasthan) India
www.jvbi.ac.in

Printed by :

Scanned by CamScanner

Contents

Section-1 (A) : Jain Philosophy

1. प्राचीन जैन साहित्य में शरीर और चिकित्सा विज्ञान 3-16
   प्रो. दामोदर शास्त्री
2. आगम व्याख्या-साहित्य में प्रतिक्रमण प्रायश्चित्त 17-27
   प्रो. समणी कुसुमप्रज्ञा
3. आचार्य महाप्रज्ञ-साहित्य में अध्यात्म-विकास की भूमिकाएं 29-42
   प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा एवं डॉ. समणी श्रेयसप्रज्ञा
4. जैनदर्शन में समुद्घात की अवधारणा 43-57
   समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा
5. **Number Theory: A Mathematical Solution of Metaphysical Problems in Jaina *Āgama*** 59-72
   Dr Samani Vinay Pragya
6. **Communication and our Relations** 73-84
   Dr Samani Aagam Pragya
7. जैन परंपरा में मान्य सूर्य एवं चन्द्रमाँ का स्वरूप 85-95
   डॉ. योगेश कुमार जैन
8. पर्यावरण संरक्षण और जैन धर्म 97-103
   डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़
9. पर्यावरण प्रदूषण की समस्या और जैन दर्शन 105-119
   डॉ. समणी हिमप्रज्ञा
10. सामायिक आवश्यक : एक अनुशीलन 121-141
    डॉ. मुमुक्षु वन्दना मेहता

Section-1 (B) : Experimental Researches on Preksha Meditation

11. **Role of Preksha Meditation in Improvement of Blood Count and Biochemistry of Adults** 145-154
    Dr Pradyumna Singh Shekhawat

Scanned by CamScanner

12. **Effect of Preksha Meditation on Cognitive Distortion** 155-174
Dr Samani Sulabh Pragya

13. **प्रेक्षाध्यान का महाविद्यालयी छात्राओं की सृजनात्मक क्षमताओं पर प्रभाव का अध्ययन** 175-183
डॉ. अशोक भास्कर

Section-2 (A) : Indian Culture

14. **बीकानेर संभाग में प्राप्त संस्कृत अभिलेखों का सांस्कृतिक तत्व** 187-194
डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा

15. **अहिंसक जीवनशैली: सामाजिक समरसता का आधार गांधीयन परिप्रेक्ष्य** 195-207
डॉ. जुगलकिशोर दाधीच

16. **वैदिक संस्कृति में तप की महत्ता एवं उपादेयता** 209-221
डॉ. सुनिता इंदोरिया

17. **कालिदास के साहित्य में सामाजिक समरसता** 223-229
डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

18. **आचार्य महाप्रज्ञ का शिक्षा दर्शन** 231-244
डॉ. हेमलता जोशी

Section-2 (B) Miscellaneous

19. **Choice Based Credit System: A new paradigm Shift in Indian University Platform** 247-260
Dr Bhabagrahi Pradhan

20. **Various Types of Cooperation in Rural Communities of Ladnun, Rajasthan: A study** 261-278
Dr Bijendr Pradhan

21. **Diasporic Conditions and the Aporia of Female Sensibility in Jhumpa Lahiri's The Namesake.** 279-288
Dr Govind Sarswat

Scanned by CamScanner

कालिदास के साहित्य में सामाजिक समरसता

*****

*डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज

सारांशिका

प्राचीन काल से ही सामाजिक समरसता हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। सामाजिक समरसता के अनेक प्रतिमान हो सकते हैं। यथा–जातिगत अस्पृश्यता, आर्थिक समानता, समान दण्डनीति, सर्वजन हिताय–सर्वजन सुखाय परक नीतियों का निर्माण, सर्व कल्याण की भावना, सबका साथ–सबका विकास, रोजगार के समान अवसर, राजा या नेता के द्वारा सर्व समाज का उत्थान, विनयशीलता, त्याग एवं दया आदि। कालिदास के साहित्य में समरसता को हम इन्हीं रूपों में स्वीकार कर सकते हैं। यद्यपि उनके साहित्य में पात्र उच्च वर्ग के रहे हैं, लेकिन उन पात्रों ने कभी भी समाज या समाज के लोगों में किसी प्रकार का भेद–भाव नहीं किया। वे समाज और राष्ट्र विषयक समरसता के विषय में भलि–भाँति विचार करते हैं। कालिदास ने पुरुरवा, दुष्यन्त और भरत से लेकर दिलीप और उसके परवर्ती वंशज राजाओं तक और उससे भी परवर्ती अग्निमित्र तक के समाज और राष्ट्र की परिकल्पना प्रस्तुत की है। इसमें कहीं भी राष्ट्र या समाज की आधुनिक संकीर्ण अवधारणा नहीं रही। हमारा राष्ट्र विषयक चिन्तन तो समग्र विश्व को एक राष्ट्र मानने वाला है।

सम्बद्ध शब्द : कालिदास, सामाजिक समरसता, भारतीय संस्कृति, समाज, दान, समानता, राजा– प्रजा आदि।

---

*सहायक आचार्य, प्राकृत एव संस्कृत विभाग
जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) लाडनूं 341306 (राजस्थान)

Scanned by CamScanner